

28422

नाम श्री कल्याण मठ

पत्र सं. १-१०

पत्र सं. १-१०

पत्र सं. १-१०

पत्र सं. (पत्र)

पत्र सं. (पत्र)

पत्र सं. (पत्र)

पत्र सं. (पत्र)

पत्र सं. (पत्र)

001460

पत्र सं. (पत्र)



ॐ शंकराय नमः । व ह तौ व ह ॥ १ ॥ वि श्वरू पा ह स्त न्त लो वि वि रु व ॥
 सा रा दे ल प नु रा म ए ना म ॥ १ ॥ श्री कृष्ण व ती न ख ती क र्ति नी क त्या स
 ता स भू ता वि वि श्वरू पा सा रा दे ल प नु रा म ए ना म ॥ २ ॥ अ र च त रा ज
 र ता स्त्री स ता ब्र ह्म णिः स ता ज्ञा या प त्या नु ते न क र्त्ता रं वं धु छ ड ॥ ३ ॥
 ज्ञा न या ह मे ष ध्या स नीः क त्या ज्ञा इ ड या या न्ते त्रे व नु या स ॥ ४ ॥
 पु या वा ते पु रु षे ष ॥ ५ ॥ ज्ञा ध म न्त्र धृ त रा प थः रा म या
 धृ त ॥ प्र ल क् ष णि प्र हि णो य यो स ता स ते ह न रा ॥ ६ ॥ व ती नी न न्ति
 र सो ध्य सौ नः पु रो ह तः ॥ व ती वी क त्या ज्ञा ज्ञा न्ते स ता ज्ञा

[illegible]

उद्धृतं

कृतात्। मुवंतुलावीरुधोवीयेणद्रुणकृधिः पयसरुषीण
 म्। ॥ १॥ यथा वा तस्यावयदि नृन्यारे तु मंत रिताच्चात्तु एका
 म अर्धे ब्रह्म तु म पायतिः ३। अथ का मं नानंद ती विनंज
 गर्दनी वं कर्तुं न च खितो तु ता ब्रह्मण बीर्मा वता ॥ १॥ अ
 यं पंथाः कले ति ह्य नया मो जि प्रहितां नति ला पहि एम नते
 नाभिया हि जं जल नल ती व वाहि ती विश्वरूपा कु कृदिता पाप
 रो कृते जो तिरपयेते अ वी म न ता म दय ना न्त ए व। परे ए
 हिन व ति ३ नाका ३ अ ति दुर्गः स्त्री ह्य ना कं ति का म रे ॥ १॥

॥ २॥

मते व हि वि र्यं श्रम वा ने से ने क कं न लने वा नि व र द्वा। अ यो वा ला ग ह प ले
 वा तं इ व क का नि मु शी न पा द य ना ग म म्। पु त म्। मु ति य ए पा य
 क र्दं वि व से त म्। न ले व ज्ञा स्ता य न्। म य ॥ १॥ उ पा ह त म नु कु
 नि र्वा तं वै रं स्ता र्धं न्व वि द्या क र्त्त म्। त दे तु य त का अ र त त ना का
 इ व वि व र्त्ता हं तु स ता न्त त म्। ज्ञा म्। ता र्वा य म्। अ य म्। मं त
 नो गृ हे वि वा ते च त य ति ध प रं। ॥ ३॥ ति श्रै व परे ही तो शा ते कि
 वि हे लो मो ॥ ६॥ श्री क ले क ले पा दो वा वि क र्म मि नि र्द व दं श यी च
 स्मा न्न स तु यो म्। ज्ञा नं प्र जा व ती ॥ १॥ से मो रा जा धि षा म्। ति ता य
 न्त सानः प त यो म्। उ यं तु ॥ २॥ प्र वा

॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥

वतुषदी २

शुक्ली वस्त्र तां पाप न्निवेक त्याज्यते। उच्यते विद्युत्तद्वदेति॥३॥
यद्येवाथर्थादीन् सत्यां तां संनृता विन्यस्त्यां सेतो ह्यपेक्षं नृ
त्वा पुनः परे हि उच्यते॥४॥ अथ यैकां तां स्वरं च तां सर्वं नरं तौ उ
चितं परे हि जानीहि च तौ नृत्तरं दुहिते वपितरं स्वमा॥ परे हि
च तौ मातिश्च विदुस्त्वेव परं न॥ मृगः समं मयुः स नृत्वा निकर्ष
मर्हति॥५॥ अथ वेदं ति हर्षं सिनं प्रत्याहया परं ह॥ उत हर्षं न नि
श्रुते निहं लपयंति॥६॥ एतद्विष्टुमेव को जे हि यत एयया यस्त

॥३॥

वकारतं प्रति॥७॥ अथ नृत्तं हला वै नीमा च तौ मा नो गम्यं पुनः पंचधीः
यत्र यत्रा सि निहिता ततः स्यात्ता पमान सि पल्लवधी यसी प्रवा॥८॥ य
दि स्वं तमस्तद्वता जा जेना नि हि तारव॥ सर्वाः संलुप्ये तः क स्याः पु
नः कर्त्तुं प्रहि एमसि॥९॥ च त्वा क तो व न जि नो जि नि क दि एः प्रजा
मृणी हि लो मो ढि पो मृ न च त्वा क तो ज हि॥१०॥ यथा स्तु को मुच्यते
तमं सस्य रिश त्रिं जहा स्तु य सं श्य के त न॥ एवाहं सर्वं दुर्लभं कर्त्तुं न स्या
च तां च तह स्ती व र जो उ रि तं ज ह नि॥११॥ क॥ इष्टा इष्टिर सि ह ला



हेतिरुसिमेत्यामे निरुसिन्वा मुहि के योऽनु मदिष्ट प्रकाशः ॥१॥ सुक
 लोसिप तिसरो सिप्रत्य प्रियरुले सिप्रतिप्र रीवरयोऽस्मात्क हि
 यवयं दिष्टः ॥३॥ सु रिरासिव वेधित्तनूपा केवि ॥४॥ सु केसि
 ज्ञा जे सिस्वरुि ज्योतिर सि। आ मुहि जेयां सम तिसमं कामः ॥५॥ इ
 यामां ज्ञा नि प्रकाश मु जे प्रकाश प्रहो वजे स हसवी र्वे सर्व स्म उषये
 ला ॥१॥ सत्य जिते सपथ यावनी सत मोता पुनः स राय स वाः सम जो
 प धीरि को नः पारमार्थि ति ॥२॥ या अं शा पश पनेन याद्य वर माद धो।
 पार स स्थ हरणय ज्ञा त पारे जे लोक मं तु सा ॥३॥ यो ते न क्रु रा मे पा जेयां

अथ

वकुनील लोहिदे। आपे मां से स तां पां वकुसुया च तः च तो ज हि ॥१॥ दो
 शं शो दो जि वि तार को ज्ञा जे म रा धः ॥ दुर्लभ्यः स वा उ वी वस्ता अ स्म नीरा
 याम सि ॥५॥ नु धा पारं रं स्ता पारं म जे ता म न पद्य ता म अ यो मा रं ल पा
 वयं सर्व त द प म जे ॥६॥ नु स्ता पारं रं धा पार म यो अ न प रा ज य म
 ज्ञा पा मा रं ल य व यं सर्व त द प म जे ॥७॥ अ पा ता रं ज्ञा वि धी नां सर्वा ला
 जे क रं रीः तेन ते म ज्ञा ॥ स्ति त प्रथ ल प म द थ र ॥८॥ ठा स मं ज्यो तिः
 स्त मे ण ज्ञा रं ज्ञी स मा व ती। च ले मि स ल म त र साः स तु ज ल रीः ॥९॥ यो



वाः नृत्वा सत्ताहराद्विदुषो गृहम् वसो धर्मसु विवता तुरन्तं प्रत्युपपद्य
 ताम् ॥ २॥ अमा च त्वामा ध्याने यस्तो न्य जिघांसति ॥ अरमानसा स्तोदधायो
 बहुलाः फलैरिह ॥ ३॥ सहस्रं धाम निशिखा निश्रीको छायायात् ॥ ४॥
 तस्मिन्नुपेक्ष्य त्रिंशो त्रिंशो वते हर ॥ ४॥ अनयाहमोषध्या सर्वाः नृत्वा
 अदुष्टं कर्तुं त्रैलोक्यं गोप्यं वा ते पुरुषेषु ॥ ५॥ यश्च कारुण्यं सत्ता
 कर्तुं शक्तेषां पुंशु रिचकार अदम्यमा ताने तपन्तु साः ॥ ६॥ अमा
 जेपमाहं हे त्रिवेद्यापयस्य ॥ ७॥ अमाहं सा तु धनीरपसर्वाकाराय ॥ ८॥ अ
 पम इयमो दुधमा नपसर्वा अराय ॥ ९॥ अमा मोर्त्यो वयं सर्वतपपममहे ॥ १०॥

उतो अस्या वंधु जटुतो असेनुना मिहत् उतो अस्या नतः प्रजोनउ
 निवाति धिवा र्चिक ॥ १॥ बास्तणेन पर्युक्ता सिक्कवतनार्थ देव ॥ सेने
 वेत्ति हिमिती नतन प्रयं स्तियत्रा जोषधे ॥ २॥ अयमेष्टो
 षधीनी जोतिषे वा निदीपयन् ॥ ३॥ तत्राता सिद्धा कस्या यो हताति
 रक्त संः ॥ ४॥ पदो देवा असुरं स्तुषाये नि कुर्वता तत्स्वमधा
 षधे पा मागे अजायाः ॥ ५॥ विजिंदाती रातरां रको विजिंदा
 मते धिता ॥ ६॥ यज्विहितं तयो अस्मां अमिपा सति ॥ ७॥ अस
 म्स्याः तपमव नद्यामिति प्रहवः ॥ ८॥ तदेततो विधुपाय त्रस्यको



रत्न १५॥ प्रत्यक्ष हि संवत्सरे विद्य प्रतीक्षा न फलस्त्वं। सर्वं न्यतपय्योऽत्र
 भिवरी को व्यावयावधः। १॥ रातेन मा प रि पा हि स ह स्ते ए नि र क मा र्
 उ स्ते वी रा ध्मं प त उ य क्त ज्मा न मा द ध त। ॥ ये पुर स्ता ज्जु क्ति जा त
 वे र्तः प्रा च्छा दि शो नि रा स त् स स्मा न्। ॥ अग्नि मृत्वा ते प रां यो व्य थं तां प्र
 त्प गे ना न् प्र ति स रे ण ह नि। १॥ ये द क्षि ण तो जु क्ति जा त वे दो द क्षि
 ण या दि शो नि रा स त् स स्मा न्। य म मृ त्वा ते प रां यो व्य थं तां प्र त्प गे ना न् प्र
 ति स रे ण ह नि। ॥ ये प र्वा ज्जु क्ति जा त वे दः प्र ती च्छा दि शो नि रा स
 त् स स्मा न्। व रु ण मृ त्वा ते प रां यो व्य थं तां प्र त्प गे ना न् प्र ति स रे ण ह नि। ३॥
 य उ त्त र तो जु क्ति जा त वे द उ द या दि शो नि रा स त् स स्मा न्। स्म म मृ ॥ १॥

त्वा मु ते प रां यो व्य थं तां प्र त्प गे ना न् प्र ति स रे ण ह नि। १॥ ये प र्वा ज्जु
 क्ति जा त वे दो द क्षि ण या दि शो नि रा स त् स स्मा न्। य म मृ त्वा ते प रां यो व्य थं
 तां प्र त्प गे ना न् प्र ति स रे ण ह नि। १॥ ये द क्षि ण तो जु क्ति जा त वे दो द क्षि
 ण या दि शो नि रा स त् स स्मा न्। वा मु ण मृ त्वा ते प रां यो व्य थं तां प्र त्प गे ना न् प्र
 ति स रे ण ह नि। १॥ य उ त्त र तो जु क्ति जा त वे द उ द क्षि ण या दि शो नि
 रा स त् स स्मा न्। स र्प मृ त्वा ते प रां यो व्य थं तां प्र त्प गे ना न् प्र ति स रे ण
 ह नि। १॥ ये दि शो न त र्दो यो जु क्ति जा त वे दः स र्वा दि शो नि
 रा स त् स स्मा न्। उ ह न्ता ते प रां यो व्य थं तां प्र त्प गे ना न् प्र ति स रे ण
 ह नि। १॥ सु प र्ण स्त्वा न्य वि द स्त क र स्त्वा र व न न्न सा दि शो न धे त्वा दि



संतमवचसाकतेजहि॥१॥अतजहिअतुधमजनवचसाकतेजहि
 ज्ञायोमोअसावदिपावितमुलेजहोषधी॥२॥दिव्यस्येवपरीक्षासोप
 रिक्तस्यपरिलुपः॥३॥असाकसाकतेदेवा निष्प्रियवतिमुवता॥४॥
 पुनः॥असाकसाकतेहस्तगृहीपरापया॥सप्रहप्रस्थाआधेहियया
 असाकतेहनत॥५॥असाः॥अतुअसाकतेरायः॥अपयीयते॥सु
 खिरथेश्वरवर्ततो॥असाकसाकतेपुनः॥६॥यदिरनीयदिवापुमी
 नूअसाककारपासने॥सातुषेनयास्यत्वमिवासा निधन्या॥
 ७॥यदिवाप्तिदेवअसायदिवापुसधेः॥असा॥सातुपुनलीयससिदे
 एसयुजावया॥असातैतनाषादृतेनाः॥सहस्व॥पुनः॥असाक

त्याकतैप्रतिसुरेकेनहरामसि॥१॥अतव्यधनि॥अतययकारतनि
 जहि॥असामेवकुपेवयवंधयसंविशीमहि॥२॥पुत्रइववितरंग
 हस्यजहवाजिजितारशोवंधु॥मिवावक्रामीगहकलेअसाक
 तंपुनः॥३॥अवेणीववारण्यनिरुदंमगाव॥असाकतीरमह
 ॥४॥॥६॥असाकजीपःपततुद्यावधियवीतंजति॥सातुगनिवय
 जालअसाकसाकतेपुनः॥७॥असातेतुप्रतिकूलप्रवृत्ति
 जमिलोदुजे॥सुखेयश्ववर्ततां॥असाकसाकतेपुनः॥८॥
 ॥९॥अतैरुसमेपत्रेयोअकुर्वीतधन्ये॥अमेमांसेअसायांचकु
 पुनः॥अतिहरामितां॥१०॥अतिचक्रुः॥अक्रवाकावजेवायांकुरीदिदि॥



[illegible]

कव्यदेवुनः प्रविहरामितो ॥ ६ ॥ अथ ये मातृभारैर्नोत्तमयेतः प्रहिय
सिः अथोरोमयाधिरन्यः संजनाराविष्णीयश्चकारनराशकक
हंरात्रेयामंगलित्वकारजइमस्तेनमोर्नैविष्णुः ॥ ११ ॥ न्तय
नतवजनिर्मूलिनरापयेय्य ॥ इरस्तहंतमहाबुधनाग्निविधुल
स्तया ॥ १२ ॥ प्रतीवीनमोहिलमंपामार्गसरोहियमवीनमा
लपथौअधिजरीयोयावयाइतः ॥ १३ ॥ दुस्तयलमलयवावम
पुपयातयातिच्योमुखापात्रार्गमज्जरे ॥ १४ ॥ अथवदताडु
नखिनंतलेनयत्यहामेप्र ॥ अथामार्गलयावयंसर्वतदुपम
॥ १५ ॥ ॥ अथपतेसरोमलिर्वीरवीरायबध्यत ॥ वीर्यवासपत्र



हा असवीरः परिपाणः सुमेधाः ॥ १० ॥ अथ मणिः सपन्नहा सुधीरः सह
 स्तान्वाजी सहमानुषः प्रत्यक्षं त्वा हूषयन्नेति वारः ॥ ११ ॥ अनेनेने
 मतिना वृत्रमहं स्नेनेना जुरा न्यराजा वयन्मनीषा ॥ अनेनाजमया
 वाद्यविवीत्र मेहमे अनेनाजम त्वादिशस्यते सः ॥ १२ ॥ अथेसा तेषम
 णिः प्रसीवनीः प्रति सरः ॥ १३ ॥ अस्तान् विमध्यवशी सो अस्मान्पातु
 सर्वतः ॥ १४ ॥ तदधिगहवतु सोमं अहिबुहस्यतिः स वितात हिः ॥ तेम
 देवाः पुरोहिताः वतीषीः ॥ १५ ॥ अति सरः रजं तु ॥ १६ ॥ अतर्पेय वा एधि
 वीत्रताहसतस्यी तेमे देवाः पुरोहिताः वतीषीः सत्याः प्रति सरः रजं
 तु ॥ १७ ॥ अथ स्वस्वमणिं जनाचमः सिन्धु एव ते ॥ १८ ॥ अथ विवर्मरुहा विरु

सत्याः

त्यावाधतेवत् ॥ १९ ॥ अथ स्वस्वमणिं जनाचमः सिन्धु एव ते ॥ २० ॥ अथ विवर्मरुहा विरु
 एतना विपुलैः तनिरस सः ॥ २१ ॥ अथ गो गिरसीर्यः सत्याः ॥ २२ ॥ अथ
 यीक्ष स्याः स्वयं सतायात्र वान्ये चिराभृताः ॥ २३ ॥ अथ यीः स्याः परायेतु परा
 वतो नव हिना व्यावृत्ति ॥ २४ ॥ अथ स्येन लिं कर्म वधोतु देवा इहो विदुः
 सन्निता रुशो अगिः ॥ २५ ॥ अथ प्रतिपर मेछा विरापि स्यान्तरं अथैयस्य सेवी
 ॥ २६ ॥ अतमो अस्वो वधोना मनसा नृजगता प्रिव व्याघ्रः स्वपदा भिवाय
 मेछाया विपापतं अस्थि शीन मंतिता ॥ २७ ॥ अथैछा छोत्र व सथे सिहो
 अथैव प्रा ॥ २८ ॥ अथै सपन्न वीर्यो नायो बिनाजी मेमणि ॥ २९ ॥ अथै सपन्न
 नगधवीनमर्त्ता ॥ ३० ॥ अथै दिशो विराजतियो ॥ ३१ ॥ अथै नजी मेमणि ॥ ३२ ॥ अथै
 पत्न्या मस्त जतक श्यो स्या स मेरयत् ॥ ३३ ॥ अथै सपन्न वीर्यो नायो बिनाजी



श्रीविष्णुजयस्तु ॥ मणिं सहस्रवार्यं वर्यं देवा अक्षयवत् ॥ १४ ॥ यस्यास्त्या
 त्रिर्यस्यादीना त्रिर्यहो यस्या जिघांसति ॥ त्रत्यक्षमिंद्रं तं जहिव ज्ञे एरा
 तप वे ए ॥ १५ ॥ अयमिंद्रं त्रिवर्त्तु ज्ञात्वा न संजयो मणिः ॥ अज्ञा धनं वरा
 न्तु परिपातः सुमंगलः ॥ १६ ॥ असपन्नाना अधराद सपन्नं न वरा
 त् ॥ इह सपन्नं नः पस्याज्योतिः सूरपुरस्तु धि ॥ १७ ॥ वर्ममेधा वा हृथिवी
 वर्महृत् वर्मस्तु यः ॥ वर्ममइंद्राग्निश्च ॥ वर्मधमादधा तुमे ॥ १८ ॥ इहेंद्राग्ने
 वर्मबहु संययुयं विन्दे देवानाति विध्यं तिसर्वं ॥ तस्मे तन्यं नमतां सर्वत
 ब्रह्मयुष्या नृजरदृष्टिर्मेधास्तानि ॥ १९ ॥ अमा रूक्ष देवमणिः प्रिया अ
 रिष्टता तये ॥ इमं मेथिममि संविदाधं तन्मपानं त्रिवरूथमो जसे ॥ २० ॥

